eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

वैश्वीकरणः प्रभाव एवं परिणतियां

[1] डॉ राजेश चन्द्र मिश्र
[1]एसोसिएट प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, ही.रा.पी.जी.कॉलेज,ख़लीलाबाद, संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

आज वैश्वीकरण का रथचक्र अब बहुत आगे निकल चुका है। आज दुनिया की नियति का लेख वैश्वीकरण के विजय अभियानों एवं उसके द्वारा पराभूत शक्तियों द्वारा ही लिखा जा रहा है। वैश्वीकरण के पक्ष और विपक्ष दोनों तरफ की परिस्थितियाँ आज भी विद्यमान है। वैसे हमे ध्यान देना होगा कि वैश्वीकरण के आरंभिक दिनो मे विरोध का स्वर दुनिया भर में अधिक प्रखर था। विभिन्न समाजवादी,साम्यवादी खेमों के अलावा राष्ट्रवादी आंतरिक वर्चस्ववादी सभी वैश्वीकरण के विरोध में थे। लेकिन विरोध जितना उग्रतर होता गया वैश्वीकरण की गति भी धीमी पड़ती गई। आज की विश्व व्यवस्था का एक स्थापित सत्य है वैश्वीकरण। लेकिन जो विजेता है,प्रभावी है,उपस्थित है और प्रगति कर रहा है,कोई जरूरी नहीं है कि सत्य उसी के पक्ष में हो। शाह–ए–वक़्त के विजयी रथ–चक्र में कई बार कीचड़ की तरह 'अंधेरा' लिपटा होता है।

Keywords- वैश्वीकरण मजदूरी, उत्तरोत्तर वर्धमान उत्पादकता, मुद्रास्फीति की निम्न दर, अधिकाधिक समृद्धि और निरंतर आर्थिक संवृद्धि।

परिचय

वैश्वीकरण के स्थापित होने के बावजूद उसके प्रभावों एवं परिस्थितियों की पड़ताल का क्रम थमा नहीं है। आज भी इस बात की कोशिश हो रही है कि इसके सामाजिक आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाय। दरअसल वैश्वीकरण के पहिये के नीचे कुचले गये लोगो की तरफ नये सिरे से देखने की जरूरत है।आज हमें यह पड़ताल करने की जरूरत है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वैश्वीकरण ने नयी तरह से हाशियाकरण किया हो और इसने शोषण के नये आर्थिक–सामाजिक उपनिवेश बनाये हों।

वैश्वीकरण के प्रभावों का सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण करने के उपरांत ही इन सारे तथ्यों का पता लगाया जा सकता है। असल में वैश्वीकरण का अभियान जितना वैश्विक होने का दावा करता

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

है उतना यह है कि नहीं। इसकी वैश्विकता सार्वजनीन नहीं है। यह वैश्विकता अपनी मूल अन्तर्वस्तु में अभिजनोन्मुख है।

इसी कारण इस वैश्विकता में बड़ी कम्पनियों के मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी, नेटीजन्स एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रमुख भर शामिल हैं।इस प्रकार सम्पन्नता का तो वैश्वीकरण हो रहा है।सम्पन्न लोग मिल–जुल कर हाथ में हाथ मिलाकर आगे बढ़ने का निरंतर उपक्रम कर रहे हैं,लेकिन दुनिया भर में गरीबी, अज्ञानता ,जहालत को मिलजुल कर दूर करने का बड़ा प्रयास कहाँ दिखता है। यह सत्य है कि आज वैश्वीकरण की चकाचौंध है। यही धुन यत्र–तत्र सर्वत्र है, लेकिन असमानता, पिछड़ेपन एवं सामाजिक अपंगता से उपजी वेदना की मद्धिम सिम्फनी भी उपलब्ध है। इसे शोर और चकाचौंध में कोई सुन नहीं रहा है।

दरअसल वैश्वीकरण में एक तरफ के वर्चस्व की मंशा भी है। अनेक प्रगतिशील अर्थशास्त्रियों ने इस प्रश्न को उठाया है कि वर्तमान भूमंडलीकरण के समर्थको का प्रमुख लक्ष्य है सारी दुनिया को एक ही रंग में रंगना। अर्थात इनका प्रयास यह है कि विभिन्न प्रकार की सामाजिक–सांस्कृतिक या राष्ट्रीयता को मिटाकर वैश्वीकरण के लिए समरूपता लाया जाय। इसे और स्पष्ट कहा जाय तो वह वस्तुतः अमेरिकी संस्कृति और जीवन–शैली को सारे संसार पर थोपना है। यह बात यूँ ही नहीं है। इसका प्रतिनिधि उदाहरण अक्सर पेश किया जा सकता है। इसका एक उदाहरण अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री हेनरी किसिंगर का वक्तव्य है। यह वक्तव्य उन्होने डब्लिन (आयरलैंड) के ट्रिनिटी कॉलेज में दिया था। उन्होंने इस व्याख्यान में जोरदार शब्दों में यह रेखांकित किया था कि "भूमंडलीकरण वस्तुतः अमेरिकी वर्चस्व का ही पर्यायवाची है।

यह स्वाभाविक ही है कि दुनिया के देश अमेरिका की उपलब्धियों को देखते हुए उसका अनुसरण करें। अमेरिका ने अकूत धन अर्जित किया है, पूंजी की उपलब्धता बढ़ाई है, नवीनतम प्रौद्योगिकी विकसित की है और अनगिनत प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए बाजार बनाया। फलतः वह पूर्ण रोजगार ,लगातार बढ़ती वास्तविक मजदूरी, उत्तरोत्तर वर्धमान उत्पादकता, मुद्रास्फीति की निम्न दर, अधिकाधिक समृद्धि और निरंतर आर्थिक संवृद्धि की ओर बढ़ रहा है। जिस प्रकार भूमंडलीकरण का पिछला दौर ब्रिटिश नेतृत्व में चला इसी प्रकार वर्तमान दौर के लिए अमेरिकी नेतृत्व अपरिहार्य है। संसार को अमेरिकी विचारों ,मूल्यों और जीवनशैली को अपनाना ही पड़ेगा।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

उसके सामने कोई अन्य विकल्प नहीं है।" (साहित्य में समाज –गिरीश मिश्र ,लेख –भूमंडलीकरण के कैदी–पृष्ठ –17)

इसी तरह का विचार एक प्रमुख अमेरिकन चिंतक टॉमस एल. फ्रीडमैन ने व्यक्त किया। उन्होंने अमेरिका का जयघोष करते हुए बताया कि "हम अमेरिकी द्रुतगामी विश्व के देवदूत, मुक्त बाजार के पैगम्बर और उच्च प्रौद्योगिकी के प्रमुख पुरस्कर्ता है। हम चाहते है कि सारी दुनिया हमारा अनुसरण करे और जनतांत्रिक एवं पूंजी बने। हर पात्र में एक वेबसाईट, हर होठ से लगी पैप्सी का बोतल, हर कम्प्यूटर में माइक्रोसॉफ्ट विंडोज हो और प्रत्येक व्यक्ति की गाड़ी में हमारा ही पेट्रोल हो।"

(ए मेनिफेस्टो फॉर द फास्ट वर्ल्ड " द न्यूयार्क टाइम्स मैगजीन 28 मार्च 1999)

इसी विषय पर प्रकाश डालते हुए अन्यत्र फ्रीडमैन ने कहा कि " भूमंडलीकरण की अपनी प्रमुख संस्कृति है, जिस कारण उसकी प्रवृति समरूप बनने की है.....सांस्कृतिक दृष्टि से कहें तो पूर्णयता न सही, मुख्यतया भूमंडलीकरण का अर्थ अमेरिकीकरण– बिगमैक्स से मिकी माऊस तक का विश्वभर में प्रसार करना है।" (फ्रीडमैन, द लेक्सस एन्ड द ओलिव ट्री,न्यूयार्क 1999, पृष्ठ 8)

वैश्विक स्तर पर यही हो भी रहा है। मैकडोनॉल्ड, पेप्सी कोक, टॉमी हिल फिग र,ब्रेनिटन स्टार बक्सया बरिस्ता, केंटकी फ्रायड चिकन को वैश्विक प्रसार मिलता है। दुनियाभर में इनका वर्चस्व बढ़ा है। इस प्रकार खान–पान से लेकर पहनावे तक के विविध क्षेत्रो में अमेरिकी प्रभाव को देखा जा सकता है। इस प्रकार "मानव इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि समाज के हर स्तर का लगभग प्रत्येक व्यक्ति जाने–अनजाने भूमंडलीकरण के प्रभाव को झेल रहा है। वह उसे मीडिया में पाता है, अपने भोजन में चखता है और जो भी वस्तुएं खरीदता है,उनमें महसूस करता है। यह चीज असंतोष को भी जन्म देती है क्योंकि उसे लगता है कि उसकी पारम्परिक संस्कृति और पहचान खतरे में पड़ सकती है।"

(साहित्य में समाजः गिरीश मिश्र पृष्ठ –18)

इसी प्रकार वैश्वीकरण के भीतर निहित दुष्प्रवृत्तियों की पड़ताल जरूरी है। वैश्वीकरण के इस दौर में भारत जैसे देशों को इसके प्रभावों एवं परिणीतियो को विशेष रूप से देखना और परखना जरूरी है। इसके दो कारण हैं एक तो इस देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अब भी गरीबी रेखा के नीचे है। दूसरा कारण सांस्कृतिक है और सांस्कृतिक कारण इस नाते महत्वपूर्ण है क्योंकि

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

भारत एक विशिष्ट सांस्कृतिक इतिहास और स्मृतियों वाला देश है। इसकी प्राचीनता एवं इसकी अक्षुण्णता के मद्देनजर वैश्वीकरण के इस दौर में इसकी विशिष्टता का परिरक्षण आवश्यक हो जाता है। हर्बर्ट शिलर जैसे विद्वान वैश्वीकरण को सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के रूप में देखते है। 'कम्युनिकेशन्स एण्ड कल्चरल डॉमिनेशन' में हर्बर्ट शिलर ने इस तथ्य को रेखांकित किया है। दरअसल इस सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के तहत विदेशी माल की मांग बढ़ाने ,स्थानीय उद्योग की संवृद्धि रोकने और उपभोक्तावादी मानसिकता को बढ़ावा दिया जाता है। वैश्वीकरण का प्रवाह क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशिष्टता को या तो समाप्त कर देती है या उसे अपने भीतर समाहित कर लेती है। इसमें समाज के कमजोर समूहों की आवाज की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है और पूरी दुनिया में निर्ज्जलतापूर्वक लाभ और लोभ का वैश्विक खेल चलता रहता है।